प्रश्न :- आदिकाल की प्रमुख काव्य रचना भविसयत्त कहा (भविष्यदत्त कथा) पर एक संक्षिप्त नोट लिखें ?

उत्तर :-

जैन कवि धनपाल द्वारा रचित 'भविसयत्त कहा' अपभ्रंश भाषा में रचित कथा-काव्य है जिसकी रचना राहुल जी के अनुसार 10वीं शती में तथा मोतीलाल मेनारिया के अनुसार संवत् 1081 वि० में हुई। इस ग्रन्थ में वणिकपुत्र भविष्यदत्त की कथा है जो अपने सौतेले भाई बन्धुदत्त के द्वारा प्रवंचित होने पर भी जिन महिमा से अन्त में सुखी होता है।

इस काव्य-ग्रन्थ का वस्तु-वर्णन अत्यंत हृदयग्राही है जिसमें शृंगार, वीर एवं शांत रसों की प्रधानता है। मार्मिक स्थलों से युक्त इस कथा काव्य के कवि धनपाल की प्रतिभा सामने आती है। भविष्यदत्त की व्याकुलता का चित्र निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है—

गयं विप्पुलं तीम सव्वं वणिज्जम्।
हुवं आइ रोतम्मि लज्जा वणिज्जम्॥

नायिका के सौन्दर्य निरूपण में भी कवि को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। इस काव्य-ग्रन्थ में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास, अतिशयोक्ति अलंकारों का सुन्दर प्रयोग मिलता है तथा भुजंगप्रयात, मंदार, चामर, कलहंस, लवंगम, शंख जैसे वर्णिक एवं मात्रिक छंदों का प्रयोग किया गया है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार—"इन चरितकाव्यों के अध्ययन से परवर्ती काल के हिन्दी साहित्य के कथानक, कथानक रूढ़ियों, काव्य रूपों, कवि प्रसिद्धियों, छन्द योजना, वर्णन शैली, वस्तुविन्यास, कवि कौशल आदि की कहानी बहुत स्पष्ट हो जाती है। इसलिए इन काव्यों से हिन्दी साहित्य के विकास

के अध्ययन में बहुत महत्वपूर्ण सहायता प्राप्त होती है।"

वस्तुतः इन चरित-काव्यों को साहित्य क्षेत्र से बहिष्कृत नहीं माना जा सकता, जैसा कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इनकी संवेग को देखकर कर दिया है, ये साहित्यिक ग्रन्थ ही माने जाने चाहिए।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न:- भविसयत्त कहा पर एक नोट लिखें?

पता:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
मो० न०- 7909046087
दिनांक -08.02.2022